This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **5685**

Unique Paper Code : **205640** **E**

Name of the Paper : **Hindi B**

Name of the Course : **B.A. (Programme)**

Semester : **VI**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित अवतरणों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :

(क) "बीती अनेक शताब्दियाँ जिस देश में रहते तुम्हें,
क्या लाज आवेगी उसे अपना 'वतन' कहते तुम्हें ?
तुम लोग भारत को कभी समझो अरब से कम नहीं ?
यद्यपि जगत में और कोई देश इसके सम नहीं ॥" 8

अथवा

आतीं विदेशों से यहाँ सब वस्तुएँ व्यवहार की,
धन-धान्य जाता है यहाँ से, यह दशा व्यापार की ।
कैसे न फैले दीनता, कैसे न हम भूखों मरें;
ऐसी दशा में देश की भगवान ही रक्षा करें ॥

P.T.O.

(ख) तुम्हें भी वैसे ही करना चाहिए था । (उठ जाते हैं । कोट-टाई वगैरह उतारते हुए) मेरा मतलब जैसा ज़माना हो, उसी के मुताबिक चलना चाहिए । आखिर और लोग भी तो आये थे । वह बात और है कि तुम अपनी ईमानदारी और बेदाग हुकूमत के लिए पूरे सूबे में मशहूर हो । यह मेरे लिए फख्र की बात है । मगर अब यह तुम्हारी शान के खिलाफ है कि एक मामूली बात पर ऐसी नौकरी से 'रिज़ाइन' कर दो । लोग क्या कहेंगे । 7

अथवा

कैसे जानता ? ..... तुम इधर नौकरी में आये, मैं उधर राजनीति में छूट गया ..... तुम इधर जी-जान से घर-गृहस्थी सजाने लगे, दिन-रात नौकरी करते रहे, मैं उधर विरोध में जा फँसा ..... । रास्ते में कई बार देखा था, तुम मुझसे आँख बचाये भागे चले जा रहे थे । ..... मैंने कई बार पुकारा । कई बार तुम्हें ..... ।

(ग) हठात् गवाक्ष के कपाट खुले और देवी अम्बपाली उसमें अपनी मोहक मुस्कान के साथ आ खड़ी हुई । नख से शिख तक उन्होंने बासंती परिधान धारण किया था । उनके मस्तक पर एक अतिभव्य किरीट था, जिसमें सूर्य की-सी कान्ति का एक अलभ्य पुखराज धक-धक दिप रहा था । कानों में दिव्य नीलम के कुण्डल और कण्ठ में मरकतमणि का एक अलौकिक हार था । उनकी करधनी बड़ी-बड़ी इक्कीस मणियों की बनी थी, जिनमें प्रत्येक का भार ग्यारह टंक था । वे माणिक्य उनकी देह-

यष्टि में लिपटे हुए उस मधुदिवस के प्रभाव की स्वर्ण-धूप में इक्कीस बालारुणों की छटा विस्तार कर रहे थे । उनकी घन-सुचिक्कण अलकें प्रभात की मन्द समीर में क्रीड़ा कर रही थीं । स्वर्णखचित-कंचुकी-सुगठित युगल यौवन दर्शकों पर मादक प्रभाव डाल रहे थे । 8

अथवा

"अरे मूर्खों, तुम जल से शरीर की बाह्य शुद्धि करके उसे ही महत्व देते हो, तुम अन्तरात्मा की शुद्धि को नहीं जानते । अरे, यज्ञ करने वाले ब्राह्मणों, तुम दर्भयज्ञ, यूप, आह्वनीय, गन्ध, तृण, पशुबलि, काष्ठ और अग्नि तक ही अपनी ज्ञानसत्ता को सीमित रखते हो; तुमने असत्य का, चोरी का, परिग्रह का त्याग नहीं किया । तुम स्वर्ण, दक्षिणा और भोजन के लालची पेटू ब्राह्मण हो, तुम शरीर को महत्व देते हो, शरीर की सेवा में लगे रहते हो । तुम सच्चे और वास्तविक यज्ञ को नहीं जानते ।"

2. 'भारत-भारती' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए । 15

अथवा

'भारती-भारती' के काव्य-सौंदर्य का सोदाहरण चित्रण कीजिए ।

3. 'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक में 'राजन' के चरित्र पर विचार कीजिए । 15

अथवा

'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक मूल्यों के बीच टकराहट को व्यक्त करता है, स्पष्ट कीजिए ।

4. 'वैशाली की नगरवधू' उपन्यास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए । 15

अथवा

'वैशाली की नगरवधू' के आधार पर तत्कालीन समाज में चित्रित स्त्री की स्थिति पर विचार कीजिए ।

5. किसी **एक** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : 7

(क) 'मिस्टर अभिमन्यु' की नाट्यभाषा

(ख) 'भारत-भारती' की काव्यभाषा

(ग) 'वैशाली की नगरवधू' की कथाभाषा ।